

Sl.No. :

नामांक			Roll No.			

No. of Sections – 3

SS-32-SH. HD. (Hindi)

No. of Printed Pages – 07

यहाँ से काटिए

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2016
SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2016
हिन्दी शीघ्रलिपि
(SHORTHAND HINDI)

समय : 3¼ घण्टे

पूर्णांक : 40

प्रश्न पत्र को खोलने के लिए यहाँ फाड़ें

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

- 1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें ।
- 2) तीनों खण्ड एक ही बैठक में लिखाये जायें ।
- 3) प्रथम एवं द्वितीय खण्डों तथा द्वितीय एवं तृतीय खण्डों के बीच में 5-5 मिनट का मध्यान्तर दिया जाये । तीनों खण्डों के संकेत लिपि श्रुतलेखों के हिन्दी अक्षरीकरण के लिए 2¾ घंटे का समय दिया जाए ।
- 4) केवल निम्न विराम-चिह्न ही लगाएं :
पूर्ण विराम, अर्द्ध-विराम और प्रश्न-चिह्न एवं कोष्ठक ।
- 5) संकेत लिपि पेन्सिल से लिखा जाए तथा उसका अनुवाद हिन्दी में टंकण यंत्र / कम्प्यूटर से ही टंकित किया जाय । हाथ से लिखा मान्य नहीं होगा ।
- 6) संकेत लिपि में लिखा हुआ श्रुतलेख उत्तर-पुस्तिका के साथ नत्थी कर दिया जाए ।
- 7) संकेत लिपि के 20% अंक रखे गये हैं ।
- 8) खण्ड प्रथम 4 मिनट, खण्ड द्वितीय 5 मिनट तथा खण्ड तृतीय 7 मिनट लिखवाने के रखे गए हैं । प्रत्येक खण्ड 80 शब्द प्रति मिनट की गति से बोला जाय ।

यहाँ से काटिए

(इसे 80 शब्द प्रति मिनट की गति से लिखा जाए)

रामदास एण्ड फतेहचन्द कम्पनी

क्रॉकरी के विक्रेता

तार का पता : 'राम'	28, गांधी मार्ग,	
टेलीफोन नं/ : 2727632	क्नाट प्लेस,	[1/4]
कोड नं. : आर. ए. एफ.	सूरत ।	
पत्र क्रमांक : 7361/ / 454		[1/2]

दिनांक : 15 फरवरी, 2016

सर्व श्री अरविन्द गुड्स सर्विसेज,
गोविन्द पन्त मार्ग,
बड़ोदा ।

विषय /: माल की क्षतिपूर्ति हेतु । [3/4]

प्रिय महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित 2 जनवरी, 2016 का माल हमें प्राप्त // हुआ । हमें खेद के साथ लिखना पड़ रहा [1]

है कि जब हमने पेटियां खोलों तो बहुत सारा माल टूटा / हुआ मिला । टूटे हुए सामान का विस्तृत विवरण [1/4]

हमने ट्रांसपोर्ट कम्पनी को बता दिया था । क्षतिग्रस्त माल की / सम्पूर्ण सूचना आपको भी भिजवा दी [1/2]

थी । अपनी व्यापारिक शर्तों के अनुसार 10% हर्जाने के साथ टूटे हुए / माल की क्षतिपूर्ति हेतु निवेदन [1/4]

किया था ।

किन्तु आपके द्वारा अभी तक कोई प्रत्युत्तर प्राप्त नहीं हुआ है। // हमने माल की आपूर्ति के साथ [2]
 क्षतिपूर्ति के शीघ्र भुगतान का भी आग्रह किया था। ताकि भविष्य में अपने / व्यापारिक संबंध मधुर [2¼]
 बने रहें। आपकी उदासीनता से ऐसा प्रतीत होता है कि आप 10% हर्जाने के साथ / माल की आपूर्ति [2½]
 नहीं करना चाहते हैं।

त्योहारी मांग को देखते हुए हमें व्यापार में काफी नुकसान उठाना पड़ / रहा है। ग्राहकों की मांग [2¾]
 के अनुसार हमें अन्यत्र स्थान से ज्यादा कीमतों पर माल मंगाना पड़ा है // [3]

अतः हमें दुःख के साथ लिखना पड़ रहा है कि आप या तो आने वाले 15 दिनों में माल की / [3¼]
 आपूर्ति 10% हर्जाने के साथ कर दें अन्यथा मजबूर होकर हमें कानूनी कार्यवाही करना पड़ेगी। आपकी
 सुविधा के / लिये क्षतिग्रस्त माल की एक कॉपी पुनः प्रेषित कर रहे हैं। [3½]

संलग्न : क्षतिग्रस्त माल भवदीय,
 की / प्रतिलिपि रामदास एण्ड फतेहचन्द [3¾]
 तथा ट्रांसपोर्ट कम्पनी कम्पनी के लिये,
 की रिपोर्ट एवम् हस्ताक्षर
 बीजक की प्रति रामदास
 साझेदार // [4]

द्वितीय खण्ड

[10]

(इसे प्रति मिनट 80 शब्दों की गति से लिखा जाए)

क्रमांक : 222

दिनांक : 3 मार्च, 2016

अधीक्षण अभियन्ता,

जल संसाधन वृत्त,

इन्दौर ।

प्रसंग : / आपका पत्रांक लेखा 735 दिनांक 10.01.2016

[1/4]

महोदय,

उपरोक्त प्रासंगिक पत्र के सन्दर्भ में निवेदन है / कि आपके द्वारा प्रदत्त कार्य की निविदाएं [1/2]

स्वीकृति पश्चात् एवम् निर्देशानुसार मैसर्स राजधानी कॉन्ट्रेक्टर, पुरानी चुंगी के पीछे जेबी / रोड, [3/4]

भोपाल को कार्य आदेश जारी किये गये । कार्य आदेशानुसार 10.10.2015 को प्रारम्भ कर // [1]

10.02.2016 को पूर्ण किया जाना था । संवेदक द्वारा कार्य की स्पान वाईज प्रगति रखी गई / थी । [1 1/4]

निर्देशानुसार है कि उक्त कार्य अलग प्रवृत्ति का है जिसमें विभाग एवं संवेदक को राजस्व विभाग

के पटवारियों / पर निर्भर रहना होता है । मुटाम लगाने के लिये चिन्हीकरण हल्का पटवारियों द्वारा ही [1 1/2]

दिया जाता है । उक्त / कार्य कर विभाग द्वारा समय – समय पर निवेदन करने के फलस्वरूप सम्बन्धित [1 3/4]

हल्का पटवारियों द्वारा सहयोग प्रदान करने हेतु मुटाम // लगाने हेतु स्थान चिन्हीकरण में यथासम्भव [2]

सहयोग दिया जाता रहा है, जिसके फलस्वरूप संवेदक ने कार्य आदेश राशि रूपये / 46, 28, 215 के [2 1/4]

विरुद्ध राशि रूपये 32,75,419 /- का कार्य सम्पादित कर लिया / था तथा कार्य की प्रगति के अनुसार [2 1/2]

कार्य निर्धारित समय तक पूर्ण हो जाना था, परन्तु अचानक मौसम परिवर्तन / के कारण सम्बन्धित क्षेत्र [2 3/4]

- व पूरे राज्य में आंधी, वर्षा एवं ओलावृष्टि के कारण किसानों की फसलों को भारी // नुकसान होने के [3]
- कारण राज्य सरकार ने सभी पटवारियों को किसानों को हुए नुकसान के आंकलन में नियुक्त कर तुरन्त / [3¼]
- रिपोर्ट देने के निर्देश देने के कारण मुटाम लगाने का कार्य प्रभावित हुआ एवं सम्बन्धित हल्का पटवारी
- फसलों के नुकसान / के आंकलन में व्यस्त हो गये हैं। इस कारण संवेदन को उसके द्वारा तैयार मुटामों [3½]
- को लगाने हेतु चिन्हित / स्थान यथा समय उपलब्ध नहीं हो सकें। इस कारण कार्य प्रभावित हुआ है। [3¾]
- निवेदन है कि चूंकि कार्य // की भौतिक प्रगति अनुसार लगभग 90 प्रतिशत तक कार्य पूर्ण हो [4]
- चुका है तथा शेष कार्य दिनांक 25.03/. 2016 तक पूर्ण कर लिये जाने की पूर्ण संभावना है। अतः [4¼]
- श्रीमान् से इस कार्यालय के पत्रांक / 203 द्वारा अनुरोध किया गया था कि कार्य पूर्ण करने एवं अनुबंध [4½]
- को जीवित रखने हेतु कार्य की समयावधि 25 /. 03. 2016 तक बढ़ाने की अनुशंसा की गई थी। [4¾]

भवदीय

अधिशाषी अभियन्ता

जल संसाधन खण्ड,

इन्दौर//

[5]

तृतीय खण्ड

[20]

(इसे 80 शब्द प्रति मिनट की गति से लिखा जाए)

स्वतंत्रता संग्राम की अमरनायिका

रानी अवंति बाई

- भारतीय नारियों ने इस पुरुष प्रधान समाज में अपना एक अलग मुकाम बनाया /। देश का स्वर्णिम [1¼]
- इतिहास भी महिलाओं की शौर्य गाथाओं से भरा पड़ा है, चाहे वे दुर्गावती, लक्ष्मीबाई /, झलकारीबाई, [1½]
- अजीजन बी या कल्पनादत्ता ही क्यों न हों? इनमें तो बहुत सी महिलाओं को हम जानते / भी नहीं जो आज [¾]
- भी गुमनामी के अंधेरे में खोई हुई हैं।

अवन्तीबाई का शौर्य पराक्रम अपने आप // में अद्वितीय है । भारत की माटी में पलकर बड़ी होने [1]
 वाली यह सिंहनी गुलामी की निराशा के तिमिर में / एक ज्वाला थी । अवन्तीबाई ऐसा नाम है जिससे [1¼]
 अंग्रेजी सेनापति वालिंगटन और उसकी सेना ठीक ऐसे कांपती थी / जैसे शेरनी के आगे हिरण । वीरता [1½]
 और त्याग की पर्याय इस देवी का जन्म 16 अगस्त सन् 1831 शिवनी / जिले के मनकेड़ी नामक [1¾]
 ग्रामीण राज्य में हुआ था । माता का नाम कृष्णा बाई और पिता का नाम जुझारूसिंह // मनकेड़ी के [2]
 राजा थे । इस चन्द्रमुखी बेटी को पाकर वे धन्य हो गये । बचपन में इस बालिका ने / अपने पिता को [2¼]
 वचन दिया था कि वह अपना नाम बेटों की तरह रोशन करेगी । तलवारों की झनझनाहट और / घोड़ों की [2½]
 हिनहिनाहट, परिवार के संस्कारों, बंदूक को गोलियों बारूद की गंध तथा बलिदान, शान और पराक्रम/ [2¾]
 के परिवेश में पली बड़ी यह बालिका आज्ञादी की पहली लड़ाई में अमर नायिका बन गई ।

अवन्ती बाई का // विवाह रामगढ़ के राजा लक्ष्मणसिंह के पुत्र विक्रमादित्य के साथ सम्पन्न [3]
 हुआ । सन् 1851 में पिता राजसिंह की मृत्यु / के बाद विक्रमादित्य सिंहासन पर बैठे । किन्तु कुछ समय [3¼]
 बाद ही विक्षिप्त हो गये और असमय ही 1855 में / मृत्यु हो गई । यह घटना रानी के लिये वज्रघात के [3½]
 समान थी । उनके दो बेटे थे अमानसिंह और / शेरसिंह । नाबालिग अमानसिंह की ओर से उत्तराधिकारी के [3¾]
 रूप में रानी ने राज्य की कमान सम्भाली । किन्तु अंग्रेज // शासकों ने अमानसिंह को नाबालिग करार [4]
 देकर रामगढ़ की रियासत 'कोर्ट ऑफ बोर्ड' से ले ली ।

एक सामन्त / के विश्वासघात के कारण जब गढ़ा के राजा शंकरशाह और उनके पुत्र रघुनाथशाह [4¼]
 को अंग्रेजों द्वारा तोप के मुंह में / बाँधकर उड़ा देने की खबर रानी अवन्ती बाई ने सुनी तो विद्रोह की आग [4½]
 उनके अन्दर फूट पड़ी । सन् / 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में समूचे उत्तर भारत में क्रांति में [4¾]
 शामिल होने का आव्हान करने के लिये, // कमल का फूल और रोटी भेजी गई थी । यह सन्देश रानी [5]
 अवन्ती को मिला । रानी ने जागीरदारों / और मालगुजारों को एकत्रित करने के लिये अपने हाथ से [5¼]
 लिखा कागज का पुर्जा भिजवाया । संदेश यह था—/ “कि देश के लिये लड़ो या चूड़ियां पहनकर बैठ [5½]
 जाओ”

- रानी ने एक बड़ी सैनिक टोली का नेतृत्व / कर मंडल से एक किलोमीटर पूर्व खैरी गाँव में मोर्चा [5³/₄]
जमाया । रानी की तलवार से अंग्रेज सेनापति वॉलिंगटन घायल // हुआ और भाग खड़ा हुआ । [6]
- रानी ने मुट्ठीभर सैनिकों के साथ अलौकिक वीरता का परिचय दिया । उनके नेतृत्व / में वीरता और [6¹/₄]
आजादी प्रेम के लिये क्षेत्रीय जनता ने तन मन धन से सहयोग दिया । अवन्तीबाई आजादी / के हवनकुंड [6¹/₂]
में अपनी आहुति देकर इसे तेजस्विता और ओजस्विता प्रदान कर अमर हो गई । आजादी की बलिबेदी
पर / जिन वीरों और वीरांगनाओं ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया वे अमर हो गये और एक इतिहास [6³/₄]
रच गये । // [7]

